Pandal Sri Radhyas9



सप्तसती-माहात्म्य

[लेखकः—आचार्य श्रीरमानन्द सारस्वत शास्त्री]

[निखिल-भुवन-नायिका सकल प्रपञ्च बीज-रूपा पराम्बा महामाया जगदम्बाके महास्तोत्रोंमें सप्तशती स्तोत्र प्रमुख है। इस स्तोत्रकी अधिष्ठात्री जगदम्बा पूर्णषोडशी महात्रिपुरसुन्दरी श्रीविद्या हैं। इन महाशक्तिके इच्छा, ज्ञान, क्रिया, अथवा रौद्रा ज्येष्ठा और वामा स्वरूपोंका विवेचन ही तीनों चरित्रोंमें त्रिगुण रूपोंमें हुआ है। सृष्टि स्थिति और संहार चक्रोंके इसी त्रिपुरका प्रतिपादन इस स्तोत्रका अन्तर्निहित लक्ष्य है। इसी त्रिगुणात्मिकाके युगल रूपों सहित मूल विद्याको 'सप्तसती' रहस्य गर्भित शब्दोंमें संकलित किया है। इसी त्रिगुणका त्रिगुणरूप 'नवदुर्गा' है। कहनेकी आवश्यकता नहीं कि विविध रहस्यमयी परिभाषाओंसे युक्त इस महास्तवराजका माहात्म्य अनन्त है और इसका सम्यगनुष्ठान करनेसे भुक्ति मुक्ति करतलगत होना अनुभूत विषय है।

इस लेखमें विद्वान् लेखकने उन्हीं सात सतियों अथवा महाशक्तियोंके शास्त्रीय पद्धतिमें प्रचलित नामोंका उल्लेखन किया है। लेख सारगर्भित और महत्त्वपूर्ण होनेसे इन शारदीय नवरात्रियोंके अवसर पर हम अपने विद्वान् पाठकोंको यह लेख सहर्ष समुपहृत करते हैं।

—सम्पादक]

भारतवर्षमें चिरकालसे महामाया पराशक्ति जगदम्बा की आराधना विविध रूपमें प्रचलित है। उन समस्त उपासना प्रकारोंमें 'सप्तसतीस्तोत्र' का पाठ एवं तदन्तर्गत मन्त्रोंका जप एवं अनेक विधिके प्रयोग कितने ही प्रकारों से प्रचलित हैं। इस लेखमें उसी स्तोत्रके माहात्म्यका कुछ वर्णन करनेका प्रयत्न किया जा रहा है।

'सप्तसती स्तोत्र' वैसे तो मार्कण्डेय पुराणमें मिलता है, किन्तु आगम शास्त्रोंके सूक्ष्म विचारसे पता लगता है कि यह वेदका भाँति अपौरुषेय ही है और पुराणमें इसका संग्रह मात्र प्रकरणवश हो गया है। भुवनेश्वरीतंत्रमें लिखा है—

यथा वेदो ह्यनादिर्हि तद्वत् सप्तशती स्मृता।

इसी प्रकार मेरुतंत्रमें भी आया है कि सप्तशती स्तोत्रका वेदोंकी भांति व्यास भगवान्के हृदयमें स्फुरण होनेसे उन्होंने इसका प्रकाशमात्र किया है।

"सप्तसत्या सकलं तत्वं वेद्म्यहमेव हि।
पादोनं श्रीहरिर्वेत्ति वेत्त्यर्धं तु प्रजापतिः॥
व्यासस्तुर्यांशकं वेत्ति कोट्यंशं हीतरेजनाः॥"

तात्पर्य यह है इसके सूत्र इससे पहले भी प्राप्त होते हैं। डामरतन्त्रमें इसकी महत्ता प्रतिपादित करते हुए कहा गया है :—

"यथाश्वमेधः क्रतुषु देवेषु च यथा हरिः।
स्तवेष्वपि सर्वेषु मुख्यः सप्तशती स्तवः।
नातः परतरं स्तोत्रं किंचिदस्ति वरानने।
भुक्ति मुक्तिप्रदं पुण्यं पावनानां च पावनम्॥"

इन सबसे यह भली भांति ज्ञात होता है कि इस स्तोत्र में अन्य स्तोत्रोंकी अपेक्षा कुछ वैशिष्ट्य है। यही कारण है कि इस नास्तिक्यके युगमें भी लाखों लोग इसका पूरा आधा या थोड़ा पाठ स्वयं नित्य करते अथवा कराते हैं। इस स्तोत्रका यों तो प्रतिदिन पाठ ही शुभफल प्रद है, किंतु शारदीय नवरात्रोंमें विशेष रूपसे यह फलदायक है। लिखा है—

"शरत्काले महापूजा क्रियते या च वार्षिकी।
तस्यां ममैतन्माहात्म्यं श्रुत्वा भक्ति समन्वितः॥"

भाव यह है कि शारदीय नवरात्रियोंमें महामायाकी महापूजा कर यदि इस स्तोत्रका पाठ किया जाय तो अत्यन्त पुण्य होता है। इस स्तोत्रको अधिकतर लोग 'सप्तशती स्तोत्र' कहते हैं, किन्तु इसका एक असली नाम और भी

शास्त्रोंमें मिलता है जो है 'सप्तसती'। सात सौ श्लोक रूपी मन्त्रोंका संग्रह होनेसे अथवा सात सौ प्रयोगोंका इस स्तोत्रमें वर्णन होनेसे 'सप्तशती' नाम भी वैसे तो अन्वर्थ ही है। उन सात सौ प्रयोगोंका विवरण इस प्रकार है—

"प्रयोगाणां तु नवति मारणे मोहनेऽत्र तु।
उच्चाटे स्तम्भने वापि प्रयोगाणां शतद्वयम्॥
मध्यमेऽथ चरित्रे स्यात्तृतीयेऽथ चरित्रके।
विद्वेषवश्ययोश्चात्र प्रयोगारिकृते मताः॥
एवं सप्तशतं चात्र प्रयोगाः संप्रकीर्तिताः
तस्मात्सप्तशतीत्येवं प्रोक्तं व्यासेन धीमता॥

अर्थात् कुल मिलाकर इस स्तोत्रमें मारणके ९०, मोहन के ९०, उच्चाटनके दो सौ, स्तंभनके सौ तथा साठ साठ प्रयोग विद्वेषण और वशीकरणके इस प्रकार सात सौ कुल प्रयोग वर्णित हैं। इसीलिये चिदम्बर संहिता में इसे—

"तस्मिन् देव्याः स्तवे दिव्ये मन्त्राः सप्तशतं प्रिये!
तस्मात्सप्तशती नाम स्तवं परमदुर्लभम्॥"

इन शब्दोंमें 'सप्तशती' कहा गया है। किंतु यह तो हुआ अन्वर्थ नाम करण। इस स्तोत्रका वास्तविक द्वितीय नाम 'सप्तसती' है। क्योंकि इसमें सात सतियोंका या देवियोंका वर्णन है। इन सात सतियोंकी अथवा देवियोंकी उपासना क्रमशः ब्रह्मा, इन्द्र, गुरु, शुक्र, विष्णु, रुद्र, और असुर इन्होंने की थीं। ये सात देवियाँ इन सातोंकी उपास्य देवताएँ थीं—उन सातोंका स्तवन ब्रह्मा द्वारा किया गया—उसका ही भगवान् व्यासने अपने शब्दोंमें वर्णन किया है। इस समय प्राप्त सप्तशती स्तोत्र 'षट्सूत्री सम्वाद' में परिगणित किया जा सकता है। इन सात देवियोंके चरित्रानुसार तीन तीन रूप भी हैं, और उनकी मूलाधिष्ठात्री 'महालक्ष्मी' है। इस प्रकार त्रिगुण तत्वका एकविंशात्मिका युक्त प्रकृत्यात्मक स्वरूप इस स्तोत्रमें वर्णित है। इन सात देवियोंके नाम इस प्रकार हैं—

प्रथम चरित्र में—१ काली, २. तारा ३. छिन्न मस्ता ४. सुमुखी ५. भुवनेश्वरी ६. बाला ७. कुब्जा।

द्वितीय चरित्र में—१. लक्ष्मी २. ललिता ३. काली ४. दुर्गा ५. गायत्री ६. अरुन्धती ७. सरस्वती।

तृतीय चरित्र में—१. ब्राह्मी २. माहेश्वरी ३. कौमारी ४. वैष्णवी ५. वाराही ६. नारसिंही ७. चामुण्डा या शिवा। कहीं कहीं ऐंद्री या इन्द्राणीका भी परिगणन किया गया है, वहां चामुण्डा मूल प्रकृति रूपमें वर्णित है। इस प्रकार तीनों चरित्रोंमें कुल २१ देवियोंके माहात्म्य या प्रयोग संगृहीत किये गये हैं। इन देवियोंमें भी जिन सात मूल देवियोंका वर्णन आया है, वे इस प्रकार हैं—१. नन्दा २. शताक्षी ३. शाकम्भरी ४. भीमा ५. रक्तदन्तिका ६. दुर्गा ७. भ्रामरी ये ही तत्त्वतः इस स्तोत्रकी अधिष्ठात्री देवियां हैं। इनके ही नाम पर इस स्तोत्रको 'सप्तसती स्तोत्र' कहा गया है, इस रहस्यका निदर्शन मेरुतन्त्र के निम्न वचनोंमें मिलता है—

"महाविद्येत्यादि सत्यः सप्तकल्पे तथादिमे।
ब्रह्मेन्द्र गुरुशुक्राणां विष्णुरुद्रसुरद्विषाम्॥
उपास्या देवता जातास्ताश्चात्र ब्रह्मणा स्तुताः।
तस्मात्सप्तसतीत्येव व्यासेन परिकीर्तिता॥"

आदि।

इस प्रकार पता लगता है कि आदिम कल्पमें इन सात शक्तियोंने प्रादुर्भूत होकर संसार चक्रका प्रवर्तन किया और अपना विशिष्ट तेजोंश इस धरतीतल पर प्रसारित किया। इस स्तोत्रसे इसी हेतु सद्यः समस्त कामनाओंकी परिपूर्ति होती है।

इस स्तोत्रके अनेक प्रकारसे अनेक पाठ आदिके भेद प्रचलित हैं। जिनमें गौड़, केरल तथा काश्मीर मुख्य हैं। इन सबका विवेचन प्रकृत विषयसे बहिर्भूत है। हां, प्रसङ्गोपात्त इतना वर्णन आवश्यक लगता है कि इसके मुख्यतः दो प्रकार हैं। एक पक्ष 'नवार्ण पक्ष' का है, दूसरा 'सप्तशती पक्ष' है। नवार्ण पक्षमें दीक्षित व्यक्तिको नवार्ण वर्णित यंत्रमें यंत्रस्थ देवताओंका सावरणार्चन कर उसके अंग रूपमें सप्तशती पाठ करना पड़ता है। सप्तशती माला मंत्र दीक्षित व्यक्तिको द्वितीय पक्षानुसार रहस्योंमें वर्णित प्रकारसे युग्म देवियोंका सावरण 'सप्त सतियों' के मुख्यत्व रूपमें अर्चना कर आद्यन्तमें नवार्णका जपकर स्तोत्र पाठ करना पड़ता है। जहां तक देखा गया है इस स्तोत्रको नवार्ण पुटित पाठ ही करनेका अधिक प्रमाण मिलता है। किंतु दोनों पक्षोंकी अर्चन पद्धति विभिन्न है और आम्नाय परम्परा पूजित साम्प्रदायिक जनों में प्रचलित भी है। अस्तु। इन दोनों पाठ और जप प्रकारों का विवेचन कीलकमें अच्छी तरह किया गया है।

यदि कभी पुनः अवसर हुआ तो रहस्यों पर विचार

शैव-शास्त्र

[प्रो० श्रीबलजिन्नाथ पण्डित शास्त्री, एम० ए० एम० ओ० एल०]

शास्त्र क्या है ? शास्त्र तो वस्तुतः परमेश्वरकी अनुग्रह शक्तिका एक विशेष प्रकारका उल्लास है। अनुग्रह शक्ति उस शक्तिका नाम है जिसके द्वारा परमेश्वर किसी जीवके हृदयमें मुमुक्षा उत्पन्न करते हैं और तदनन्तर उसे मुक्तिके मार्ग पर चलाकर स्वरूप साक्षात्कारकी चरम अवस्था पर पहुंचाते हुए उसके जीवनको कृतकृत्य कर देते हैं। संसारके जीवों और विशेष करके मनुष्योंका स्थूल शरीर और उसकी आकृति जब एक दूसरेसे मिलते नहीं तो उनका मन जो कि अत्यन्त सूक्ष्म है और सूक्ष्मता के कारण थोड़ेसे हेर फेरसे भी जो एक दूसरेसे भिन्न प्रकारका हो सकता है, वह कैसे सभी मानवोंका एक-जैसा हो। अतः यह बात निर्विवाद है कि मानवोंके अन्तःकरण भिन्न-भिन्न रुचिके, भिन्न भिन्न शक्तिके, और भिन्न भिन्न प्रवृत्तिके होते हैं। इसी कारण परमेश्वरकी अनुग्रह शक्तिका विलास भी भिन्न-भिन्न शास्त्रोंके रूपमें संसारके जीवोंके उद्धारके लिए प्रकट हुआ है। शास्त्रोंमें कहा भी है:—

चित्तभेदाद् मनुष्याणां शास्त्र भेदो वरानने !
व्याधिभेदाद् यथा भेदो भेषजानां महौजसाम् ॥
यथैकं भेषजं ज्ञात्वा न सर्वत्राभिषज्यति।
तथैकं हेतुमालम्ब्य न सर्वत्र गुरुर्भवेत् ॥

तो फिर अधिकारियोंकी शक्तिके तारतम्यके अनुसार शास्त्र भी अनेक प्रकारसे कहे गए हैं। अवर शक्तिके अधिकारियोंके लिए जो शास्त्र हैं वे मनुष्यों द्वारा कहे गए हैं। इन्हें पौरुषेय शास्त्र कहते हैं। इन शास्त्रोंसे ऊँचे वे शास्त्र हैं, जो ऋषियोंने कहे हैं। इन्हें आर्ष शास्त्र कहते हैं। ऋषि प्रोक्त शास्त्रोंसे ऊँचे अग्नि, वायु आदि देवताओंसे कहे हुए शास्त्र माने गए हैं। देवप्रोक्त शास्त्रोंसे ऊंचे ब्रह्माजी द्वारा उपदिष्ट शास्त्र हैं। ब्राह्म शास्त्रोंसे ऊपर वैष्णव शास्त्र अर्थात् भगवान् विष्णु द्वारा कहे हुए शास्त्र हैं। उनसे ऊपर भगवान् रुद्रसे उपदिष्ट शास्त्र हैं और उनसे भी ऊपरके शास्त्र क्रमसे भगवान् ईश्वर, भगवान् सदाशिव, भगवती शक्ति और भगवान् शिव द्वारा कहे गए हैं। एक साधारण मनुष्य भी अध्यात्ममार्गमें आगे-आगे बढ़ता हुआ, ऋषिसे लेकर भगवान् शिवकी दशा तक पहुंच सकता है। इस आरोह क्रममें जिस दशा पर पहुंचकर जो शास्त्र उससे कहा जाए, वह शास्त्र उसी दशाके भगवान्का कहा हुआ माना जाता है। उसे मानवीय शास्त्र नहीं कहते। यदि किसी योगीने शिव दशाका साक्षात्कार करते हुए उसी दशामें रहने वाले दृष्टिकोणसे कुछ उपदेश दिया, तो उस उपदेशको पौरुषेय शास्त्र नहीं कहा जा सकता है, वह तो साक्षात् शैव शास्त्र ही माना जा सकता है। परात्रिंशिकाकी विमर्शिनीमें आचार्य अभिनव गुप्त संकेतसे कहते हैं कि जो यह त्रिंशिका शास्त्र उमा महेश्वर संवाद रूप है उसमें शास्त्रकार शक्ति दशा पर अवरोह करते हुए प्रश्न करते हैं और पुनः शिव दशा पर आरोह करते हुए प्रश्नका समाधान करते हैं। शास्त्रोंके उपरोक्त तारतम्यके विषयमें आचार्य महोदयने 'तन्त्रालोक' में आगमोंके प्रमाणको इस प्रकारसे उद्धृत किया है :—

नरर्षिदेवब्रह्मिण विष्णु रुद्राद्युदीरितम्।
उत्तरोत्तरवैशिष्ट्यात् पूर्वपूर्वप्रबाधकम् ॥

इस प्रकारसे शैवशास्त्र सबसे ऊंचा शास्त्र है और इसका अधिकारी वही हो सकता है जो भगवान्का सच्चा अनुरागी हो, अर्थात् जिसे परमेश्वरकी भक्तिके सामने सांसारिक भोग तुच्छ प्रतीत होते हों, और जिसका हृदय भक्तिके रससे खूब सना हुआ हो। इस शास्त्रके अधिकारीके लिए बड़ा भारी विद्वान् होना आवश्यक नहीं, तीव्र तपस्वी होना भी इतना आवश्यक नहीं। दान धर्म आदि भी यहां आवश्यक नहीं माने जाते, वर्ण और आश्रमकी भी कोई पाबन्दी नहीं, न ही अवस्था या लिंग का ही कोई विचार अधिकारी के विषयमें किया जाता है। शैव शास्त्रकी दीक्षाके लिए

किया जा सकेगा। इन शारदीय नवरात्रियोंमें 'श्रीस्वाध्याय' के सभी पाठकोंको सप्तसती माहात्म्यको हृदयङ्गम करना चाहिये।

अधिकारीके पास जो परम आवश्यक गुण होना चाहिए वह भगवद्भक्ति ही है। इस गुणके होते हुए यदि विद्वत्ता, तप, स्वाध्याय, दानशीलता, ब्रह्मचर्य आदि सद्गुण हों तो सोने पर सुहागा बन सकते हैं। परन्तु भक्तिके बिना ये गुण होने पर भी कोई इस शास्त्रका अधिकारी नहीं बन सकता। आचार्य उत्पलदेवने शिवस्तोत्रावलीमें कहा भी है ;—

न योगो न तपो नार्चा क्रमः कोऽपि प्रणीयते।
अमाये शिव मार्गेऽस्मिन् भक्तिरेका प्रशस्यते॥
तथा—भक्ति लक्ष्मी समृद्धानां किमन्यदुपयाचितम्।
एतया वा दरिद्राणां किमन्यदुपयाचितम्॥

शैवशास्त्रका उपदेश तीन प्रकारसे अधिकारी भेदके अनुसार हुआ है। तीव्र बुद्धिके लिए अद्वैतके दृष्टिकोणसे, मध्यम बुद्धि वालेके लिए द्वैताद्वैतके प्रकारसे और मन्द बुद्धि वाले अधिकारीके लिए द्वैतदृष्टिसे। द्वैत शैवशास्त्रको पाशुपत शैव शास्त्र कहते हैं और अद्वैत शास्त्रको कश्मीर का शैव शास्त्र कहा जाता है। इस अद्वैत शैव शास्त्रका सूत्र स्थानीय ग्रन्थ आचार्य उत्पलदेवकी ईश्वर प्रत्यभिज्ञा है अतः इस ग्रन्थकी प्रधानताके अनुसार इस शास्त्रका दूसरा नाम प्रत्यभिज्ञाशास्त्र भी है। सर्वदर्शन संग्रहमें माधवाचार्यने इस शास्त्रका उल्लेख इसी नामसे किया है। इस शास्त्रको काश्मीरिक शास्त्र इस कारण कहा जाता है कि इस पर ग्रन्थ लेखनका कार्य कश्मीरमें ही हुआ। इस शास्त्रके त्रिमुनि:—सोमानन्द, उत्पलदेव और अभिनवगुप्त कश्मीरमें ही हुए। भारतीय दर्शनविद्याकी एक प्रफुल्लित और सुफलित शाखाके रूपमें इसका विकास कश्मीरमें ही हुआ। विचारपूर्वक देखा जाए तो कश्मीरकी सीमामें इस शास्त्रको सीमित करना अन्याय है। आचार्य अभिनवगुप्तके ज्ञान नेत्रोंको खोलने वाले गुरु जालन्धर पीठ निवासी श्री शम्भुनाथ थे। श्रीशम्भुनाथके गुरु दक्षिण देशके श्री सुमतिनाथ थे। आचार्य सोमानन्दनाथके पूर्वज आचार्य श्री संगमादित्य पहले तिब्बतमें रहा करते थे और वहांसे कश्मीर आकर यहीं बस गए थे। श्रीसंगमादित्यके पन्द्रहवें पूर्वपुरुष और लुप्तप्राय अद्वैत शैवशास्त्रके पुनः प्रवर्तन करने वाले, आचार्य त्र्यम्बकादित्य भी तिब्बतमें ही कैलास पर्वत की किसी गुफामें रहा करते थे। उनके गुरु श्री दुर्वासा मुनि थे। श्री दुर्वासा मुनिको लुप्तप्राय शैव शास्त्रका पुनः प्रचार करनेमें प्रवृत्ति कराने वाले सिद्ध श्री श्रीकण्ठनाथ थे। श्री श्रीकण्ठनाथके गुरुका नाम श्री अनन्तनाथ था। श्री अन[न्त]नाथको साक्षात् भगवती पराशक्तिसे उपदेश मिला था। श्री श्रीकण्ठनाथका नामोल्लेख कई एक ग्रन्थोंमें मिलता है परन्तु श्री अनन्तनाथका नाम मुझे केवल आचार्य अभिन[व]गुप्तकी विवृति विमर्शिनीमें मिला है। वहां आचार्य स्प[ष्ट] कहते हैं:—

"श्री श्रीकण्ठनाथश्चाधिगत तत्वः श्री मदनन्तन[ा]थात् सोऽपि श्री भगवच्छक्तित इत्यादागमेषु नि[रू]पितम्।"

अद्वैत शैवशास्त्रके प्रयोगके विषयमें कई एक तान्[त्रिक] योगशास्त्र प्रमाण माने गए हैं। उन सभी में त्रिक शास्[त्र] को सर्वोच्च स्थान दिया गया है। तन्त्रालोकमें कहा ग[या] है कि कृतयुगमें श्री खगेन्द्रनाथने, त्रेतायुगमें श्री कूर्मनाथ[ने] तथा कलियुगमें श्री मत्स्येन्द्रनाथ (मच्छन्दनाथ) ने त्रि[क] शास्त्रका प्रवर्तन किया। द्वापरयुगमें शास्त्र प्रवर्तक कौ[न] हुए हैं, इस विषयमें टीकाकारने कुछ लिखा नहीं है। तन्त्रा[]लोकमें ही अन्य स्थान पर कहा गया है कि मच्छन्दना[थ] कामरूप अर्थात् आसाममें रहा करते थे। कुल प्रक्रिया[के] प्रवर्तक भी ये ही मच्छन्दनाथ माने गए हैं। श्री आद्[य] शंकराचार्यकी सौन्दर्यलहरी पर सूक्ष्म विचार करनेसे यह स्पष्ट हो जाता है कि उन्हें भी स्वरूप साक्षात्कार शैव आगमोंके अनुसार शक्तिकी ही उपासनासे हुआ था। अत[:] योगके जिस क्रमका उन्होंने अभ्यास किया, वह त्रिकक्रम ही हो तो कोई असम्भव बात नहीं। गोरक्षापरपर्या[य] श्री महेश्वरानन्दको किसी सिद्धयोगिनीने प्राकृतभाषामें महार्थमंजरी नामक ग्रन्थ का उपदेश किया। उन्होंने उसका संस्कृतमें अनुवाद किया और टीका भी लिखी। ये गोरक्ष[]नामके महेश्वरानन्द कब और कहां हुए हैं इस विषयमें उन्होंने कुछ लिखा नही है। हां, महार्थमंजरीकी भाषा महाराष्ट्री प्राकृतसे अधिक मिलती है। सन्तोंके सम्प्रदायमें गोरखका गुरुशिष्य संबन्ध मच्छेन्द्रसे माना जाता है। हो सकता है कि ये गोरखनाथ मच्छन्द्रनाथके ही शिष्य हों।

सिन्धु घाटीमें प्रागैतिहासिक युगके जो अवशेष मोहें[]जोदड़ोमें मिले हैं उनसे यह सिद्ध होता है कि शैव धर्म भारतका एक अति प्राचीन धर्म है। मोहेंजोदड़ोके निवासी शैव धर्मके अनुयायी थे, इस बातमें कोई भी सन्देह नहीं। वहां भगवान् पशुपतिकी एक खुदी हुई मूर्ति मिली है।

सेनापति—(आगन्तुककी ओर अच्छी तरह देख कर) यह तो कोई अन्धा है।

मिहिरकुल—(सक्रोध) दिन निकलते ही एक तो भिक्षु और फिर अन्धा ?

सेनापति—(अन्धेसे) यहाँसे चला जा रे! यहाँ राजाके उद्यानमें तेरा क्या काम ?

(अन्धा बिना सुने दूसरी पगडण्डी पर चलने लगता है)

सेनापति—(उसे दूसरी ओर जाते देख कर) चलो बला टली, कहिये आप कुछ कहने लगे थे।

मिहिरकुल—क्या कहने लगा था ? (सोचते हुए) ध्यान नहीं आता। अन्धेने ध्यान बँटा दिया। अच्छा — आजकल मैंने सुना है कि नगरमें बौद्धोंका बल बढ़ रहा है।

सेनापति—आपने कैसे जाना ?

मिहिरकुल—कल रात मुझे अपने पहरेदारसे ज्ञात हुआ कि कुछ बौद्ध सन्यासी नगरमें हल-चल मचा रहे हैं। उसने पहले भी उन्हें कुछ रहस्य पूर्ण बातें करते देखा था, परन्तु वह उनके कहने में आ गया। अब कल उसने फिर उन्हें कुछ ऐसीवैसी बातचीत करते देखा है और उन पर उसे पूरा सन्देह है।

सेनापति—यह बौद्ध संन्यासी बड़े षड्यन्त्री होते हैं।

मिहिरकुल—यह लोग तो संसारसे विरक्त होकर संघाराम आदि स्थानोंमें भिक्षु बनकर रहते हैं। फिर षड्यन्त्र कैसे ? और क्यों ?

सेनापति—इन्हें खाने पीनेकी तो चिन्ता होती नहीं। खाली पड़ा मनुष्य कुछ उपद्रव ही सोचता है। आपने सुना होगा कि बौद्धों द्वारा अशोकको सिंहासन पर बैठानेमें कितने षड्यन्त्र रचे गये थे।

मिहिरकुल—हाँ, सुना है। तभी कहा जाता है कि ये लोग ही अशोककी मृत्यु होते ही साम्राज्य-ध्वंसके कारण बने हैं। उस समय भी इन बौद्ध संन्यासियोंके अनेक षड्यन्त्र चलते थे।

सेनापति—इनके कारण राज्यकी नीवें कभी दृढ़ नहीं हो सकती, ऐसे चूहे सदा नींवको खोखली करते रहते हैं और खोखली नींवकी इमारत भूकम्पका एक झटका भी सहन नहीं कर सकती।

मिहिरकुल—मैं आपके विचारसे पूर्णतया सहमत हूं। मैं साम्राज्यका विस्तार करना चाहता हूँ। परन्तु जब तक जीते हुए देशोंमें इन षड्यन्त्रियों को रसातल नहीं पहुँचा देता, तब तक वह कार्य स्थगित करना होगा। (रुक कर) हाँ, सेनापति जी! इन लोगोंको किसी प्रकारका कष्ट नहीं, दुःख नहीं, फिर ऐसी चेष्टा क्यों ?

सेनापति—महाराज! बौद्धोंके तीर्थस्थान मगधकी ओर हैं। नाना दिशाओंसे बौद्ध वहाँ तीर्थ यात्रा करने जाते हैं और आप जानते ही हैं कि उन प्रान्तोंके प्रायः सब राजा बौद्ध हैं। इस प्रकार यह सम्भव है कि, वे लोग यहाँके बौद्धों को उत्तेजित करते हों! हमें विदेशी कहकर........

(नेपथ्यमें गानेका शब्द सुनाई देता है)

मन मतकर इतना अभिमान,
खूब सजाई कञ्चन काया,
सोना चांदी द्रव्य कमाया,

मिहिरकुल—यह कौन गा रहा है ?

(गानेका और शब्द सुनाई देता है।)

निशि दिन श्रम कर जोड़ी माया,
जिस दिन यमका रथ घर आया,
किया अकेले ही प्रस्थान।............

सेनापति—कहीं वही अन्धा क्षपणक न हो ?

(क्षपणकका गाते हुए दूसरी ओरसे प्रवेश)

मन मतकर इतना अभिमान।
ऊँचे गिरि भी झुक जाते हैं,
महल धूलमें मिल जाते हैं,
मुकुट नृपोंके छिन जाते हैं,

मिहिरकुल—(क्षपणकको देखकर) फिर वही क्षपणक ! मेरा घर भी इन बौद्धोंसे बचा नहीं रहा !! यह यहाँ कैसे आया ? द्वार पर कोई नहीं ?

सेनापति—(क्षपणकका हाथ पकड़ कर) इधर तुम्हारा क्या रक्खा है ? बाहर जाओ ।

क्षपणक—भाई हमारे लिए तो इधर उधर सब एक ही है। तुम कौन हो जो हमें रोकते हो ?

सेनापति—मुँह उधर मोड़ोगे या नहीं ?

(क्षपणक मुंह उधर मोड़ लेता है, शेष शरीर वैसे ही रहता है ।)

क्षपणक—लो अब प्रसन्न हो गये भाई ?

मिहिरकुल—यह कोई नटखट जान पड़ता है।

क्षपणक—श्रीमन् ! जो आज्ञा दी थी, वह मान ली, फिर भी ऐसे विशेषण !

सेनापति—अरे बछियाके ताऊ ! यहाँ तुम्हारा नटखटपन न चलेगा । अपना मार्ग पकड़ो ।

(क्षपणक हाथ फैलाता है मानो कोई वस्तु पकड़नी हो)

क्षपणक—भाई ! पकड़ा दो हमें तो दिखाई नहीं देता ।

मिहिरकुल—यह अपने नटखटपनसे नहीं टलता। भेजो इसे बन्दीगृहमें। इन बौद्धोंने नाकमें दम कर दिया है। (रुक कर) द्वारपालको आदेश दे दो कि, किसी बौद्धको भीतर न आने दे।

(बौद्ध फिर गाने लगता है)

सब विनाशमें छिप जाते हैं,
धन वैभव यौवन समान ।
मन मत कर इतना अभिमान ॥

मिहिरकुल— ले जाओ इसे, पेड़पर मुंह नीचा करके लटका दो, यह कोई उपद्रवी है। सीधासाधा भिक्षु नहीं ।

क्षपणक—अन्धेको मत सताओ, उसकी आह बुरी होती है ।

सेनापति—चल रे भिक्षु ! उधर चल (मिहिरकुलसे) मैं इसे ठिकाने लगा कर उपस्थित होता हूँ ।

(सेनापति भिक्षुको गर्दनसे पकड़ कर जाने लगता है ।)

क्षपणक—(घबड़ा कर) यह किसका स्थान है ? आप कौन हैं ?

सेनापति—चलते चलो ! अभी सब पता लग जायगा । (दोनोंका प्रस्थान)

मिहिरकुल—एक अन्धा बौद्ध भिक्षु इतना उपद्रवी हो सकता है, यह मैंने आज जाना । अब निश्चय ही संघाराम तथा बिहार आदिकी ईंटसे ईंट बजा दूंगा। इस बौद्ध महामारीसे मुक्त हो कर तब और काम करूंगा ।

(पट परिवर्तन)

पांचवाँ दृश्य

स्थान-बौद्धविहारके बाहरकी भूमि

समय—सायंकाल

(बौद्ध विहार जलकर गिरा पड़ा है । आदित्यसेन, चन्द्रसेन, कृष्णदत्त, मातृगुप्त बैठे हैं, आकृति गम्भीर दिखाई देती है । धीरे-धीरे कुछ बातचीतका स्वर सुनाई देता है ।)

मातृगुप्त—महाराज यदि किंकणसे धर्मशिक्षा ग्रहण कर लेते तो इनकी जीवनीसे लोगोंको यह उदाहरण मिलता कि, इतने बड़े महाराजने भी इस मतमें प्रवेश करके उच्च-नीचके भाव का सर्वथा त्याग कर दिया ।

चन्द्रसेन—अरे ! अभी प्रविष्ट कहाँ हुए थे ? कोमल तन्तु बना था कि अदूरदर्शिताने सब छिन्न-भिन्न कर दिया, महाराजका क्रोध किसीसे छिपा नहीं है ।

कृष्णदत्त—उस दिन उस सैनिकने न जाने महाराजको क्या-क्या कहा होगा। उस समय हमें विदित न था कि वह महाराजका अङ्गरक्षक है।

आदित्यसेन—अंगरक्षक हो अथवा शरीर-रक्षक, हमें इससे क्या । भाई मेरी बात मानो तो अब छोड़ो इस देशको । अनार्य सम्राट्की अधी-

नतामें रहना अपमानजनक है। लज्जाजनक है। सुना है अन्धे क्षपणकको पेड़ पर उल्टा लटकाकर मार दिया है! नमो बुद्धाय! नमो बुद्धाय!! उस बेचारेको क्या पता था कि वह उस नृशंसका स्थान है।

चन्द्रसेन—अब तो यहाँ रहना बड़ा संकटमय है। मेरे विचारमें तो मगध चला जाय, वहाँके राजा बौद्ध हैं। और उस पवित्र भूमिमें अनेक विहार हैं। जीवन सुखसे व्यतीत हो जायगा।

आदित्यसेन—(इधर उधर देखकर) भाई! मानो न मानो। मेरे अनुमानमें तो विहारमें आग अपने आप नहीं लगी।

चन्द्रसेन—कुछ सन्देह तो मुझे भी है।

मातृगुप्त—सन्देह क्या! तुम्हारा अनुमान निराधार नहीं है, इतना बड़ा विहार जलकर नष्ट हो गया। राज्याधिकारी कानमें तेल डाले बैठे हैं। (कुछ आहट सुनाई देती है, सब सावधान हो जाते हैं। देवदत्तका प्रवेश)

देवदत्त—तुम सब कूप-मण्डूककी तरह पड़े हो। कुछ बाहरकी भी सुनी है?

(सब व्याकुलता प्रकट करते हैं)

आदित्यसेन—क्या सूचना लाये हो?

कृष्णदत्त—क्या कोई नया काण्ड हो गया?

चन्द्रसेन—नमो बुद्धाय! नमो बुद्धाय!! हाँ भाई कहो शीघ्र कहो? क्या समाचार है?

देवदत्त—महाराजने संघस्थविरको बन्दी कर लेने की आज्ञा दे दी थी, वह किसी प्रकार सूचना पहले मिल जानेसे भाग निकले। इस विहार के अग्निकाण्डमें भी कुछ रहस्य है, एक और भी समाचार है।

मातृगुप्त—वह क्या?

देवदत्त—आज रात यहाँ रहना सुरक्षित नहीं, कुछ नई घटना हो कर रहेगी।

आदित्यसेन—मैं तो अभी यही कह रहा था कि किसी और राज्यकी शरण लें।

कृष्णदत्त—अब हमारा और क्या छीन लेंगे, अकेला दम है। समय निकल ही जायगा।

चन्दसेन—समय क्या दम ही निकल जायगा।

देवदत्त—अब बौद्ध बनकर यहाँ रहना अपने ऊपर बला बुलाना है। मेरे विचारमें तो ....

(दश-बारह सैनिकोंका सहसा प्रवेश,)

(देवदत्त आदि सब चौंक पड़ते हैं।)

प्रधान सैनिक—घेर लो, कोई जाने न पाये, यही उपद्रवी हैं (देवदत्त चन्द्रसेन एक ओर भाग निकलते हैं। मातृगुप्त और कृष्णदत्त दूसरी ओर, आदित्यसेन वहीं भौंचक्कासा खड़ा रहता है। इन्हें इधर-उधर भागते देखकर कुछ सैनिक एक ओर और कुछ दूसरी ओर भागते हैं। प्रधान सैनिक आदित्यसेनको पकड़ लेता है।)

आदित्यसेन—हम निरपराध हैं, हमें क्यों पकड़ते हो?

प्रधान सैनिक—तुम लोगोंको खाना-पीना राज्यकी ओरसे मिला करेगा। रहनेको एक कोठड़ी मिल जायगी।

आदित्यसेन—हम पर यह कृपादृष्टि क्यों?

प्रधान सैनिक—कृपादृष्टिका कारण तो महाराज ही बतावेंगे। हम तो आज्ञा पालने वाले हैं।

आदित्यसेन—सिर चकराने लगा है, महाशय आज्ञा हो तो (शीशी निकालते हुए) यह गुलाब सुगन्ध सूंघ लूं, (रुक कर) नहीं, महाशय! क्षमा कीजिये, ऐसा उत्तम पदार्थ तो पहले आपकी सेवामें अर्पण करना चाहिए था। लीजिए। (आदित्यसेन यह कह कर शीशी बढ़ाता है। प्रधान सैनिक शीशी पकड़ लेता है और सूंघता है।)

प्रधान सैनिक—(प्रसन्न होकर,) बहुत बढ़िया है। बहुत दिनोंमें ऐसी सुगन्ध मिली है।

आदित्यसेन—(प्रसन्नता दिखाते हुए) मेरे अहो भाग्य! मेरी तुच्छ वस्तु आपको प्रिय लगी।

प्रधान सैनिक—गुलाब रस! मेरे हृदयको गुलाबकी तरह खिला दो! (शीशी सूंघता है और दूसरे

पौराणिक ऐतिह्य विवेचन

[लेखक—कश्चित् उज्जयिनीस्थ]

[ग्रीष्माङ्कसे आगे]



(२) पार्जिटर, सोमवंशी ऐलको आर्य और सूर्यवंशी इक्ष्वाकुको अनार्य-द्राविड़, इस प्रकार सोम और सूर्यवंशी राजाओंको दो भिन्न-भिन्न मनुष्य जातियोंमें विभक्त कर देते हैं। यह कपोल कल्पना है। आर्य और द्राविड़की संस्कृति जैसे एक दूसरेकी भिन्न है, वैसे सोम और सूर्यवंशी राजाओंकी नहीं, यही नहीं बल्कि एक ही है। सूर्यवंशी राजाओंको द्रविड़ बना देने पर, राम-रावण एक ही कुलके हो जाते हैं। और आश्चर्य तो यह है कि पौलस्त्य सूर्यवंशी थे, ऐसा पार्जिटर स्पष्ट सिद्ध करते जाते हैं। पुराणोंका सारा विवरण प्रमाणभूत लेने पर भी यही निकलता है कि वैशालीके राजा दक्षिणमें गये, और वहाँ अनार्यजाति की स्त्रियाँ जैसे कि कैकईके साथ उनका विवाह हुआ। रावण आदि ब्रह्मराक्षस अर्थात् आर्य-अनार्यजातिकी संकर जनता उत्पन्न हुई। रावणके अनार्यत्व परसे उसके दूरके पूर्वज वैशालीके राजवंशको अनार्य द्राविड़ मानना यह विपरीत गति है। उसी प्रकार गुजरात* प्रान्तमें शक और द्राविड़ जाति बसती है। ऐसा सर हर्बर्ट रिस्ली १९०१ के सेन्सस रिपोर्टमें कहते हैं। किन्तु गुर्जरोंके शरीरमें द्राविड़ रक्त बहता है, यह कभी मान लें तो भी इसका खुलासा करनेके लिए आनर्तमें आकर बसने वाले सूर्यवंशी राजा शर्यातिको और उनके वंशजोंको द्राविड़ माननेकी आवश्यकता नहीं पड़ती। और इधर आये हुए यादवों के पूर्वज ऐलके 'आयु' का विवाह दानवराज स्वर्भानु की पुत्रीके साथ हुआ था ऐसी पुराणमें कथा है। तथा 'पुण्यजन' नामके राक्षसोंने कुशस्थली जीत कर शर्यातिके वंशजोंको निकाल दिया, ऐसा भी इसीमें पढ़ते हैं। और यदि मैं भूलता न होऊं तो एक जगह नृत्य-आनन्द-सुख-समृद्धिका देश वह 'आनर्त' ऐसा पुराण नाम निर्वचन सूचित करता है। और शर्याति के पुत्र आनर्तका बसाया हुआ देश वह 'आनर्त' कहाया ऐसा भी पुराणका वचन है, इसके आधार पर पार्जिटर भी इसी प्रकार मानते हैं। किन्तु मेरी धारणा यह है कि 'अनृत' परसे आनर्त शब्द हुआ है, और ऋत कहते ब्राह्मणोंका यज्ञधर्म इसे न पालने वाले दस्यु-अनार्य जहाँ बसते हैं वह—आनर्त। और आबू पर्वतके आसपासका देश शाल्व नामक दानव के ताबेमें था, तथा हिडिम्ब राक्षस और उसकी बहन हेडिम्बा जो भीमसे विवाह करके घटोत्कच की माता हुई, ये सब भी गुजरात प्रान्तके थे।

इसके उपरान्त सामान्य आकारसे हम यह भी देखते हैं कि प्राचीन कालमें आर्य और अनार्योंके विवाह होते थे। इससे यदि द्राविड़ रुधिरके समावेश

* पार्जिटर गुजरात प्रान्तको नक्शोंमें 'आर्य' प्रदर्शित करते हैं।

साथी सैनिकको शीशी बढ़ाता है। सब धीरे-धीरे अचेत हो जाते हैं

आदित्यसेन—(धीरेसे) यह क्या ? यह वस्तु मेरी शीशीमें कैसे आई ? (सोचकर) ओ हो ? किसीसे मेरी शीशी बदल गई होगी।

आदित्यसेन—नमो बुद्धाय ! नमो बुद्धाय !! (चलने लगता है, रुक कर, इसकी तलवार लेकर चलता हूँ)

अचेत सैनिकोंकी तलवारें लेकर आदित्यसेन आदिका प्रस्थान

[पट परिवर्तन]

की बात स्पष्ट हो जाती है तो आनर्तमें यह सम्बन्ध मान लेनेमें आपत्ति नहीं। और इसके लिए सूर्यवंशी राजाओंको द्राविड़ ठहरानेकी भी आवश्यकता नहीं प्रतीत होती।

(३) तीसरा प्रश्न विचारका यह है कि पार्जिटर मानते हैं कि वैसे आर्य मध्य हिमालयमेंसे — गन्धमादन — और गन्धर्वोंके वसति स्थानमेंसे — आकर गङ्गा-यमुनाके प्रदेशमें बसे और वहाँसे पञ्जाब गए, या आधुनिक विद्वानोंका मत प्रचलित है उस तरह वायव्यकोणसे पञ्जाबमें आकर पूर्वकी तरफ बढ़े? आर्य मूलसे ही भारत निवासी थे कि बाहरसे आए, इस प्रश्नको इस समय एक ओर रखें, क्योंकि परदेशी प्रजाओंने बाहरसे आकर ऊंची संस्कृति उत्पन्न की है, ऐसे ग्रीस–रोम–चीन आदिके बहुतसे दृष्टान्त हैं। किन्तु इतनी ही समतासे हम सन्तोष नहीं पा सकते हैं। परन्तु अपने देशके पर्वतोंमें अपने जन समाजरूपी महा समुद्रमें टापुओंकी भांति हम लोगोंसे स्पष्ट भिन्न दीखने वाली मुण्डादिक जातियाँ देखनेमें आती हैं। उसका स्पष्टीकरण पूर्वोक्त कल्पनाके बिना नहीं हो सकता। दूसरी बात यह भी ध्यानमें रखने जैसी है कि भारतको ही आर्यजातिका प्रभव स्थान मानें तो आर्यजाति भारतसे निकलकर एक दिशा अर्थात् पश्चिममें फैले हुए यूरोपके पश्चिम भाग तक पहुँची, ऐसा मानना पड़ेगा। कारण कि उस भाग तक वेदकी भाषाका वहाँकी भाषाके साथ सम्बन्ध देखने में आता है। यों एक ही दिशामें और वह भी इतनी दूर तक प्रगति आश्चर्यकारक है। यद्यपि इसके साथ ही स्वीकार करना चाहिए कि आर्योंके भारतसे बाहरसे भारतमें आनेकी एक 'रेखा' मात्र भी वेदमें कहीं उल्लिखित मिलती नहीं है। अस्तु। अभी तो पार्जिटरका उपस्थित किया हुआ प्रश्न ही विचारणीय है। इस प्रश्नका निर्णय भी विकट है। पार्जिटरके पक्षमें जो दो-तीन वस्तुएं हैं इनको याद कर लीजिए। एक तो वेदमें किसी जगह वायव्य कोणमेंसे आनेका उल्लेख भी नहीं, और पुराण मध्य हिमालय (गन्धर्व देश-गन्धमादन) में से ऐल-आर्य आनेका बतलाते हैं। दूसरे गंगा-यमुनाका प्रदेश ही पवित्र है, पञ्जाब तो म्लेच्छ जैसा गिना जाता है। तीसरे वेदकी नदियोंके नाम पूर्वसे पश्चिम तरफ गिने जाते हैं। पश्चिम से पूर्वकी तरफ नहीं। अब वेदमें वायव्यकोण मेंसे आनेका 'शब्दप्रमाण' नहीं है यह सच है, किन्तु बाहरसे आनेका ऊपर बतलाया वैसा 'अर्थापत्ति' प्रमाण तो है ही। और ग्रन्थोंके अन्य प्रमाण निर्धारित कालक्रमके अनुसार ही हैं; देश और नदियोंका उल्लेख पश्चिमसे पूर्वकी तरफ जाता है। उदाहरणार्थ पुराने ऋग्वेदिक सूक्तोंमें सिन्धु और उसकी शाखाएं हैं, गंगा नहीं, विदेह नहीं। आरण्यक और उपनिषद्में विदेह है, कावेरी तुंगभद्रा या दंडका नहीं। पार्जिटरके ऐल–'आर्य' के लिए कोई प्रमाण नहीं। और ऋग्वेदमें जहाँ नदियोंका उल्लेख है वहाँ वह एक ही सूक्तमें है और उसमें पूर्वसे पश्चिमका क्रम है। इतनेसे ही यह सिद्ध नहीं होता कि आर्य पूर्वसे पश्चिम गए। नाम-संकीर्त्तन तो दृष्टसे अदृष्टका, पाससे दूरका भी हो सकता है और इसीसे यह सूक्त पूर्वमेंरचित होने से इसमें पूर्वसे लेकर पश्चिम तक क्रमसे नदियोंके नाम दिए हैं, ऐसा खुलासा दिया जा सकता है। गंगा-यमुनाका प्रदेश पवित्र माना जाता है और पञ्जाबका नहीं, इसका कारण तो स्पष्ट है कि गंगा-यमुनाके प्रदेशमें ही ब्राह्मण-संस्कृतिका विकास हुआ। और पञ्जाब आये दिन म्लेच्छादिक परदेशी प्रजासे आक्रांत रहा है, इस प्रकार वायव्यवादी पार्जिटरकी सभी दलीलोंका उत्तर दे सकते हैं। और आर्य वायव्य कोणसे आए इस बातको समर्थन करने वाला वेदमें कोई उल्लेख नहीं। इसका कारण यह हो सकता है कि आर्य वेदसे भी बहुत पहले आकर बसे—इससे पुराणोंमें द्रुह्युकी पश्चिम तरफ जानेकी जो कथा है और जिससे मि० पार्जिटर मिटानी शिलालेखका खुलासा करते हैं तथा ईरानियों को भी भारतसे ईरान गए हुए मानते हैं इस बात को बाधा नहीं आती। [अपूर्ण]

।। श्रियैनमः ।।

लाभ उठानेका अपूर्व अवसर !

अवश्य पढ़ें और लाभ उठावें !!

सत्येश्वर ज्योतिष कार्यालयकी सोना, चांदी, रुईकी रिपोर्टके लिये व्यापारीवर्ग क्या लिखते हैं; इसके प्रमाणमें अभी ताजा आया हुआ एक पत्र हम यहां उद्धृत करते हैं, इसे पढ़ें और आप भी लाभ उठावें —

पूज्य शास्त्री जी, प्रणाम !

आपसे मेरा गत १९९९ से सम्पर्क है। मुझे लिखते हर्ष है कि आपके अद्भुत ज्यौतिष-ज्ञानसे आपकी आगाहियें ८०।८५ प्रतिशत खरी ठहरी हैं। जैसे १९९९ के माघ में रुई फाल्गुन सुदी तक ४५० से ६२५ तक होना। और चैत्र वदीमें ५०० होना तथा वैशाखमें रुई ऊंचेमें ६५० तक और नीचेमें फिर ५५० तक होना अचूक साबित हुआ और इसी समयमें 'वेंकटेश्वर' की चेतावनीके अनुसार सोनेमें २५।३० चांदीमें ३०।३५ टकेकी तेजी अचूक साबित हुई है। इसी प्रकार 'वेंकटेश्वर' नवम्बरके १९४३ के लेखानुसार दिसम्बर तक चांदी १०५।७ सोना ६६।६७ तक अचूक हुआ है। बादकी रिपोर्ट और चैत्र सुदी तक सोना ८०।८२ चांदी १३५।४० होना बराबर मिली है और इन भावोंमें भारी मंदी होना नितान्त ठीक उतरा है। श्रावण सुदीमें चांदीकी तेजी, भाद्रपदकी तेजी-मंदी, आश्विनकी मंदी और तेजी यथार्थ प्रकाशमें आई है और १८ अक्टूबर १९४४ से चांदीमें १० टकेकी मंदी और रुईकी तेजी ठीक उतरी है। आपका ज्यौतिषज्ञान अत्युत्तम है।

भवदीय—

जीवणराम बल्देव, धुलें।

व्यापारीवर्ग स्वयं ही सोचें और अब आगामी सोना, चांदी, रुई के व्यापारसे लाभ लेना चाहें तो शीघ्र ही चेतें !

१ वस्तुकी १ माहकी रिपोर्ट ५१)	।	१ वस्तुका सिर्फ २।३ टकेका चांस ११)
१ वस्तुकी ३ माहकी रिपोर्ट १४१)	।	१ वस्तुका सिर्फ ५।७ टकेका चांस २१)
१ वस्तुकी १२ माहकी रिपोर्ट ४२५)	।	१ वस्तुका सिर्फ १०।१२ टकेका चांस ४१)

नोटः—हमारी बात शतप्रतिशत नहीं, ८०।८५ प्रतिशत मिलनेकी हम आशा रखते हैं। अतः व्यापारी सोचें व लाभ लेवें, आगे फीस बढ़ेगी। यदि आपको इस पर भी संतोष न हो तो हमसे पत्र-व्यवहार करें, वा हमारी पुरानी रिपोर्टें हमारे ग्राहकोंसे लेकर पढ़ें।

व्यापारियोंका हितेच्छु—

ज्योतिषरत्न पं० हरिशंकर शास्त्री दैवज्ञभूषण,

मु० पो० खिरकीयां (सी०पी०)।

❋ रुई का व्यापार-रुख ❋

[श्री पं० बिहारीलाल शर्मा दैवज्ञरत्न, २७१, कालबादेवी रोड, बम्बई-२]

१. चान्स—तारीख १६ अगस्त १९५७ ई० से ता० १४ नवम्बर १९५७ ई० के समयान्तरमें ग्रहोंकी चाल ढाल देखते अधिकतम तेजी व न्यूनतम मन्दीकी रफ्तार चलना पाया जाता है। इन तीन महीनोंके दरमियान रुई भावोंमें २७ टकेकी तेजीका प्रस्ताव क्रूर ग्रहोंने रखा है। दूसरी ओर शुभ ग्रहोंके दृष्टि भेदसे ग्रहोंका अभिप्राय देखते अच्छी मन्दी आना लगती है। संख्यात्मक निर्णयमें ५४ टकोंकी मंदीका आना पाया जाता है। इस प्रकार पिंडात्मक ७२० के भावमेंसे रु० ५४ बाद करते ६६६ के भाव वायदा मार्च जरीला मुगलाईको आधे नवम्बरके पूर्व देखना पड़े। जबकि ऊपरमें ७४७ से अधिक तेजी दिखाई नहीं पड़ती। इस प्रकार उच्चतम ७४७ से निम्नतम ६६६ के अन्तराल ८१ टकोंमें रुईके भाव घूमते रहेंगे। और इन तीन महीनोंमें तीन चार बार भावोंको बथला लेना होगा। सूचित उच्चतम भावोंमें बेचनेका ध्यान रखते न्यूनतमके निकटवर्ती भावोंमें खरीद करते नफाका सौदा पकाने व पचानेमें रहे। भाव ७२० से निम्नतम ७११, ७०२, ६९३ ६८४, ६७५, ६६६, ऊपरमें ७२९, ७३८,४७ और ७५६ तक पाये जाते हैं। भावोंकी मोड़ (टर्निंग) की संख्या का पूरा ख्याल रखते-खरीद या बेचाणके सौदोंको रखना या नहीं रखना, एक निर्णय कर लें। ज्योंही भावोंने फिगरों के स्टेशनका उल्लंघन किया व्यापारको नफा या नुकशानमें सुलटानेमें रहें।

२. चान्स—तारीख १५ नवम्बर १९५७ ई० से ता० १४ जनवरी १९५८ ई० पर्यन्त इन ६० दिन या दो महीनोंके लिये रुईके भावोंमें दोनों तरफकी बढ़ी घटाबढ़ी चलेगी। तेजीकारक ग्रहोंमें १८ सालसे स्वाति पर आया हुवा राहु, ज्येष्ठाके शनिका सहयोग प्राप्त करता हुआ रुईके अंगोंमेंसे पांचवां अङ्ग राशिको तीर लगा रहा है। दूसरी ओर स्वातिसे अनुराधा पर्यन्तका मंगल रुईके अंगों पर बाण लगा रहा है। तीसरे नम्बरमें स्वातिका नेपच्यून राहुकी प्रक्रियाको समर्थन दे रहा है। यही अवसर है कि आश्लेषा पर स्थित वक्री हर्षल काटनके अंगोंमेंसे तिथिको वेध रहा है। इस प्रकार राहु, ने० मं० हर्शल व सहयोगी शनिका अभिप्राय देखते रुईके भावोंमें संगीन तेजीके प्रसंग बनते हैं। अतः यहां पूर्व सूचित तेजीकी रफ्तारमें ४५ टके बढ़ना पाया जाता है। तेजीकी संख्याकी गणना ता० १५ नवम्बरके पूर्वमें हुए नीचे भावोंके स्तरसे समझना। दूसरी तरफ शुभग्रहोंके संयोग देखते बीच-बीच में रुईके पंचाग पर गु० बु० शु० आदिके तीर लगते रहेंगे, जिससे बीच-बीचमें, १५,१५,२०,२० टकेके मंदी के रियेक्शन भी आते रहेंगे। यहां मन्दीमें ३६ टकोंका पोईण्ट बैठता है। यह पोईण्ट जहांसे भाव फिरे हो यहां से समझ लेवें। इन दो महीनेमें वास्तवमें रुईके भाव दुतर्फा पुखता घटाबढ़ीमें चलेंगे। रफ्तार स्थाई न रहे। चान्स नम्बर दो की फिगरिंग लाईन पिण्ड भाव रुपये ७०० से बढ़नेमें ७१३,७२६,७३९,७५२ जबकि घटनेमें ७०० से ६८२,६७४ और ६६१ है।

तत्त्वकी बात

अपरिचित व्यक्तिसे भी आकर्षण हो जाता है। बनस्पति-विज्ञान न जानने वाला व्यक्ति भी पुष्पकी सुगन्ध का पूरा आनन्द प्राप्त करता है, पाक-विज्ञानसे अनभिज्ञ मनुष्य भी मोहनभोगका आस्वाद पूरा ले लेता है, इसी प्रकार मनुष्य भगवान्की भक्तिको भगवान्के पूर्ण परिचयके बिना भी कर सकता है।

१—गांवमें रहने वालोंको गंवार कहना ठीक नहीं। सत्यको व्यर्थ गंवाने वाला ही असली गंवार है।

२—संसारका विश्वास अपने ऊपरसे उठ जानेसे पूर्व संसारसे उठ जाता है।

३—जिन्हें चाट खानेकी अत्यधिक चाट पड़ जाती है उन्हें वह चाट ही चाट जाती है।

हर्शल व सातवें शनिसे त्रिएकादश योग में हैं । गत वर्ष ता० ७-३-५७ को राहुके तुला प्रवेशसे मन्दी समाप्त हुई । गुरु शनि और हर्शलके साथ ता० २१ और २८ सितम्बर को शुभ त्रिरेकादश अंशात्मक योग बनायेगा और शनि के साथ अन्तिम त्रिकोण २०-१०-५७ को बनायेगा । फलस्वरूप वर्षके शेषमें और इस वर्षके प्रारम्भमें भाव ऊंचे स्तर पर होंगे । ता० २८-११-५७ को गुरुदेव लग्नसे छठे तुला राशिमें प्रवेश कर रहे हैं और हर्शलसे केन्द्रमें हैं । छठा गुरु मन्दीकारक है लेकिन राहुका गुरुके साथ भ्रमण अच्छी मन्दी नहीं आने देगा । मन्दीके झटके आएंगे, बाजारमें अस्थिरता रहेगी । ता० १५-२-५८ को गुरु वक्रीसे बाजारकी लाइन बदलेगी । ता० ५-४-५८ को धनुः राशिमें वक्री होकर शनि ता० २-६-५८ को वृश्चिक में प्रवेश करेंगे । इस समय बाजारमें दुतर्फा घटाबढ़ी होगी । बाजारका रुख तेजीका रहेगा जिसका समर्थन ता० २२-६-५८ को गुरु शनिका अंशात्मक त्रिरेकादश योग करेगा । ता० २१-७-५८ को गुरुदेव तुलाराशिमें प्रवेश करेंगे । गुरुके समीपस्थ राहु बाजारका वातावरण मजबूत रखेगा । गुरु राहुकी अंशात्मक युतिसे ता० ११-८-५८ के बाद बाजारमें अच्छी तेजी आयेगी । ता० २४-६-५८ को कन्यामें जाता हुआ राहु पाटके भावोंको ऊंचाईकी पराकाष्ठा में छोड़कर छठे भवनमे विदाई लेगा । राहुकी विदाईके साथ बाजारकी सपाटी नीचे आयेगी । जिसका समर्थन अक्टूबर मासके प्रारम्भमें होने वाला गुरु शनिका अर्ध केन्द्र करेगा । नवम्बरके प्रारम्भमें धनमें जाने वाला शनि भी मन्दीका वातावरण बनाये रखेगा । इस मासके शेषमें गुरु हर्शलका केन्द्रयोग बन रहा है, पाट बाजारमें अच्छी मन्दी आयेगी । भावोंका नीचा स्तर बनेगा । इस अशुभ योगके अन्तर्गत रुई और शेयरोंके भावोंकी सपाटी भी नीचे आयेगी ।

जूट पाट बाजारकी मासिक चाल

अक्टूबर—ता० १ से ४ मंदा, ता० ५ से २० तेज, ता० २० से २६ मंदा, ता० २६ से ३० तेज

नवम्बर—ता० १ से ११ तक समान, ११ से २८ तेज, ता० २८ से ६ दिसम्बर मंदा,

दिसम्बर—ता० ७ से १८ तेज, ता० १८ से ता० ५ जनवरी १९५८ तक मन्दा ।

तीन मासका व्यापार भविष्य

[श्री प्रो० बी० सी० महता एम० आर० ए० एस० जैन-ज्योतिष ब्यूरो, ब्यावर]

तिलहन (तैलबीज)

ता० ४ अक्टूबरसे ८ नवम्बर तक शनि धनुर्नवांशमें रहेगा। यद्यपि अन्य ग्रह तेजी राशिमें चल रहे हैं, फिर भी धनु नवांशमें शनि तेलवाना बाजारोंमें तेजीके फोर्सको रोकता है, तथा बाजारोंमें नरमीका असर करता है। इसके प्रभावसे बाजार जरूर घटेंगे। यह हो सकता है कि तेजीकी प्रतिक्रिया के साथ बाजार घटेंगे क्योंकि अन्य ग्रह तेजीमें चल रहे हैं।

ता० ८ नवम्बरको शनि महाराज मकर नवांशमें प्रवेश करते हैं। गत वर्ष १६ फरवरीके आसपास शनि मकरके नवांशमें आया और ७ मार्चको मकर नवांशमें मंगल आ गया था। जिसके कारण भयंकर तेजी रुई तथा तेलवाना बाजारमें आई थी।

ठीक इसी प्रकारका यह योग अब भी बन रहा है, क्योंकि शनिका मकर नवांशमें प्रवेश होनेके बाद ता० १३ नवम्बरको मंगल भी मकर नवांशमें आ जाता है। यह योग केवल ५ दिन रहेगा, लेकिन इस थोड़ेसे समयमें भी भारी तेजी इन बाजारोंमें आ सकती है, सो पाठक व्यापारी मित्र बहुत सावधानीसे बेधड़क तेजीका व्यापार करें। शनि अस्त ता० २१ नवम्बरको हो जाता है जिससे तेजीका फोर्स थोड़ा कम होनेकी सम्भावना है। ता० २६-१२-५७ को शनि उदय होगा तथा कुंभ नवांशमें चलेगा। यहां तेजीका वातावरण ही रहेगा ऐसा अनुमान है।

चांदी सोना

इस व्यापारी वर्ष अर्थात् २४ अक्तूबर १९५७ के प्रारम्भसे कन्या राशिमें गुरु मंगल तथा तुला राशिमें सूर्य, राहु, बुध तथा वृश्चिक राशिमें शुक्र चल रहा है। यह योग तेजीका है तथा प्रत्येक मन्दीके रिएक्शनमें तेजी खेलना चाहिए। ता० २९ अक्तूबरको मंगल कन्यासे निकल कर तुला राशिमें प्रवेश करता है। जहां राहु महाराज विराज रहे हैं। इस प्रकार सूर्य, मंगल, बुध, राहु, यह चार ग्रह यहां इकट्ठे होते हैं। यहां ता० ७ नवम्बरको चन्द्र ग्रहण भी होता है। इसलिये यहां एक झटका आ सकता है।

ता० ८ को वृश्चिक राशिमें बुध आता है, तथा ता० १७ को वृश्चिकमें सूर्य भी साथ हो जाता है। इस प्रकार सूर्य, बुध, शनि साथ हो जाते हैं। तथा ता० ९ नवम्बरको मंगल भी उदित हो जाता है। इस प्रकार यह तेजी का फोर्स बढ़ाता है। ता० ९ नवम्बरके बाद तेजी खेलने वाले को अच्छा नफा आ सकता है।

ता० २८ नवम्बर को तुला राशिमें गुरु प्रवेश करता है। इस प्रकार गुरु मंगल और राहु तीनों ग्रह एक राशि में इकट्ठे हुए हैं। हमारा ख्याल है कि यहां बड़ी अच्छी घटबढ़ होगी शायद १०-१२ रु० चांदीके बाजारमें झटके के साथ निकल सकते हैं।

ता० १३ दिसम्बरको मंगल वृश्चिक राशिमें प्रवेश करता है। यहां सूर्य मंगल और शनि ग्रह साथ हो जायेंगे। उधर गुरु राहु अकेले रह जायेंगे। इसलिए एक बार फिर चांदी में तेजी आ सकती है सो सावधान रहे। यहां वातावरण तेजीका हो जावेगा तथा ता० २८ तक घटाबढ़ीके साथ बाजार बढ़ेगा सो ध्यान रहें।

ता० १ जनवरीको शनिका नेपच्यून ग्रहसे सेमी स्क्वायर योग बनता है तथा ता० १३ जनवरीको मंगलका गुरुसे भी स्क्वायर योग बनता है। इसलिये इस समयमें मन्दी अच्छी आ सकती है। यह मन्दी का वातावरण उत्तम मध्यम ता० ८ मार्च १९५८ तक रहेगा। इस समयमें कभी तेजी कभी मन्दी इस तरह की घटा बढ़ी चलेगी लेकिन रुख मन्दीका समझकर ही व्यापार करना चाहिए।

—

त्रैमासिक राशि-भविष्य

[श्री पं० नारायण शास्त्री चुलेट श्रीसरस्वती ज्योतिष कार्यालय, नागपुर २]

[यह राशिफल गोचर ग्रहोंके आधार पर लिखा गया है। प्रत्येक व्यक्तिको यह फल सर्वांशमें सही मिले यह आवश्यक नहीं। पाठकोंके आग्रहसे यह स्तम्भ प्रारम्भ किया जा रहा है। आगामी अङ्कसे यह राशिफल अधिक विचारपूर्वक दिया जावेगा। वास्तविक सूक्ष्मफल जन्मकुण्डली दशान्तर्दशादि और वर्षफल, मासदशा, मासप्रवेश लग्नादिसे ज्ञात हो सकता है। —सम्पादक]

मेष

कार्तिक मासके आरम्भमें ता० १६ अक्टूबरसे १५ नवम्बर तक तुलाके सूर्यमें यात्राके अनेक योग हैं। उदरमें विकार, धन व्यय, मानसिक चिन्तादिका प्राबल्य रहेगा। इस बीच शुक्रकी गोचर स्थिति उत्तम होनेसे स्त्री सम्बन्ध एवं उपभोग साधनोंकी वृद्धि होगी। गुरु शनिके कारण आपत्ति अरिष्ट मंडराये हुये रहेंगे, किन्तु शुक्रकी प्रबलता समय-समय पर साधक होगी। इस बीच अक्टूबर मासमें ता० २१, २२, २३, २४, ३०, ३१ तथा नवम्बरकी ता० १, २, ६, ७, ११, १२ का समय अधिक लाभप्रद रहेगा। शेष समयमें मानसिक ग्लानि तथा उपरोक्त दूषित परिणाम उपस्थित रहेंगे। ता० १५ नवम्बरसे १५ दिसम्बर तक वृश्चिकका सूर्य शारीरिक विकारका मुख्य कारण बनेगा। स्त्री-सम्बन्धोंमें रूखापन उपस्थित होगा। ता० २९ नवम्बर से तुलाका गुरु, सूर्यके आधार पर होने वाले कुत्सित फलोंमें अधिकांश सुधारका कारण बन गया है। शरीर सुख-शान्ति निर्माणके साथ व्यापार व्यवहारमें प्रसन्नता और भोग-ऐश्वर्यका वर्धक सिद्ध हुआ है। यहां केवल नवम्बरकी ता० २१ से २५ तथा दिसम्बरकी ता० १, २, १० से १३ मात्र-विशेष कमजोर हैं। ता० १५ दिसम्बरसे आरम्भ धनुः संक्रमणमें भय, आपत्ति, हीनता और रोग आदि अरिष्ट सामने हैं, किन्तु इस मासमें भी गुरु महाराज पूरे संरक्षक स्वरूप हैं। दिसम्बर ता० १९ से २२ तथा २८, २९, ३० एवं जनवरीमें ६ से १० का समय व्यापार व्यवहार आदिमें कमजोर रहेगा।

वृषभ

प्रस्तुत समयमें ता० १६ अक्टूबरसे १४ नवम्बर तकका समय तुला संक्रमणके आधार पर अनेक आपत्ति शत्रु रोग का निवारणकारी है। भय बंधन दूर होंगे। इस बीच ता० २९ नवम्बर तक गुरुकी स्थिति सुवर्णमें सुगन्धी कायम करने वाली है। बुद्धि एक विशेष परिचय प्रस्तुत करेगी। सम्मान प्रतिष्ठा और उत्साह बढ़ेगा। ता० ३१ अक्टूबरसे शुक्र भी अपना शुभ प्रभाव प्रदान कर रहे हैं। प्रस्तुत समयमें नाना प्रकारके भोग साधन मान प्रतिष्ठा, उत्तम पद आदि प्राप्त हों, व्यापारमें उत्तम लाभ मिले। इसी बीच मंगलदेव शत्रु एवं रोग रहित बनानेका पूरा प्रयत्न करते हैं। ता० १५ नवम्बरसे सूर्य मात्र कमजोर हुये हैं, फलस्वरूप मार्गभय, उदर रोग एवं व्यापारमें साधारण हानिकी स्थिति उपस्थित करेंगे। ता० १५ दिसम्बरसे धनुः संक्रमणीय सूर्य भी विकृतिका ही कारण रहा है, किन्तु समयमें विकृति ता० २९ नवम्बरसे प्रायः है। इस बीच अक्टूबरमें ता० १९, २०, २१, २२ ता० २७ से ३१ का समय तथा नवम्बरमें ता० ६, ७, ११, १२, १५, १६, १७, १८, २६, २७ का एवं दिसम्बरमें ३ से ५, १२ से १६, २३ से २५, ३१ तथा जनवरी में ता० १, ४, ५, ९ से १२ तकका समय चन्द्र द्वारा दूषित वातावरणको अवसर देनेमें विशेष सहायक रहेगा। शेष समयमें शुभफल अधिक होगा।

मिथुन

इस राशि वालोंको ता० १६ अक्टूबरसे १४ नवम्बर

का समय परेशानियों और परिश्रमका जायगा। कुछ शत्रु भी उत्पन्न होंगे, कुटुम्बमें स्वास्थ्य ठीक नहीं रहेगा। ता० १५ नवम्बरसे शत्रु रोग एवं आपत्तियां दूर होंगी। राज-काजमें व्यापार व्यवहारमें यश मिलेगा। ता० १५ दिसम्बर से पुनः कुछ विकार उपस्थित होगा। प्रवासके योग, मानसिक उद्वेग एवं चिन्ता आदि परिणाम उपस्थित हों। इस बीच शनिकी स्थिति श्रेष्ठ होनेके कारण किसी प्रकारकी विशेष चिन्ताकी आशंका नहीं की जाती। किन्तु मंगल रवि गुरुके कारण सामान्य दोष अवश्य रहेंगे। ता० २९ नवम्बरसे तो शुक्र भी शुभफल उपस्थित करने लगा है। इस बीच अक्टूबरमें ता० १७, १८, २१ से २४, ३०, ३१। नवम्बर ता० १, २, ८, ६, १०, १३, १४, १७, १८, १९, २०, २६ से ३०। दिसम्बर ता० ६, ७, १४ से १८, २३ से २७ तथा जनवरीमें ता० २, ३, ६, ७, ८, ११, १२ का समय चन्द्र आधार पर कमजोर है। शेष समयमें शुभफलों की व्याप्ति रहेगी। व्यापार व्यवहारमें यश, मान, प्रतिष्ठा, मानसिक संतोष आदि बढ़ेंगे।

कर्क

ता० १६ अक्टूबर से १४ दिसम्बर तकका समय आरम्भसे आर्थिक चिन्ताकारक रहेगा। पद प्रतिष्ठा भंग, वचन भंग, मानसिक उद्वेग, सर्वत्र निराशा हाथ लगेगी। ता० १५ नवम्बरसे शरीरमें कुछ विकार उत्पन्न हों। ता० १५ दिसम्बरसे आरम्भ होने वाला मास हर दूषत फलको समाप्त करेगा, तथा नया निर्माण, उत्साह, सरल मार्ग कायम करेगा। व्यापार व्यवहारमें राज दरबारमें यश प्रतिष्ठाका प्रतीक है। इस बीच ता० ३० अक्टूबर से ७ नवम्बर तक बुध संरक्षाका कार्य करेगा, पश्चात् इस ग्रहकी शक्ति क्षीण होगी। यह बुध पुनः ता० ३० नवम्बरसे सुधरा है। बुधके सहयोगसे दूषित फल कम होगा तथा ३० नवम्बरसे प्रारम्भ समय उत्तरोत्तर शुभ फलोंका उत्पादक रहेगा। व्यापारमें उत्तम लाभ, राज-काजमें यश, मान-मर्यादाकी वृद्धि होगी। अक्टूबर ता० १६, २०, २३ से २६। नवम्बर ता० १ से ५, ८ से १०, १५, १६, १६ से २३, २८, २९, ३०। दिसम्बर ता० १, २, ८, ६, १२, १३, १६, २०, २६, २७, २८। जनवरी ता० ४, ५, ६, १० का समय चन्द्र द्वारा दूषित है। अन्यान्य ग्रहों द्वारा दिखाये गये दूषित समयमें चन्द्रका दूषित समय भारी अशुभका कारण बना करता है। अतः अपने बचावके उपाय रखने चाहियें।

सिंह

ता० १६ अक्टूबरसे आरम्भ मासमें दिन-प्रतिदिन यशकी आशा की जाती है। भूमि, मकान, धनकी वृद्धि, हर्ष और मंगल कार्योंका प्रारम्भ, शत्रु रोग व्याधिका नाश होगा। ता० १६ नवम्बरसे समयमें कुछ विकार उपस्थित होगा। ऋण रोगादिकी उत्पत्ति और अपयशके अवसर सामने होंगे। इस बीच ता० २९ नवम्बर तक शुभ फलकारक गुरु का सहयोग विशेष लाभप्रद एवं यशकारी रहेगा। पश्चात् चतुर्थ शनि तथा उग्र रवि अपने अशुभ फल प्रस्तुत करनेमें अधिक समर्थ होंगे। ता० २९ नवम्बर ५७ तक शुक्र भी संरक्षा एवं सुख शान्ति वैभव निर्माण धर्मकार्यमें सहायकरूप है। इस बीच अक्टूबर मासमें ता० १७, १८, २१, २२, २५ से २८। नवबरमें ता० ३ से ७, १३, १४, १७, १८, २१ से २५। दिसम्बरमें ता० १ से ५, १०, ११, १४, १५, १६ से २२, २८। जनवरी ता० ६, ७, ८, ११, १२ का समय चन्द्र द्वारा दूषित है। निर्देशित समयमें व्यापार व्यवहार कम करें।

कन्या

मासारंभ ता० १६ अक्टूबरसे सूर्यकी स्थिति कमजोर है। यह अवस्था ता० १५ नवंबर तककी है। जिसमें दुःख, क्लेश, धन हानि, मार्गमें बाधा एवं अनेक उलझनें उपस्थित हों। यत्र तत्र आपत्ति सामने हो। इस बीच गुरु, मंगल भी कमजोर हैं। बुद्धि समय पर योग्य कार्य न करे, मन साधारण परिस्थितिमें उपस्थित हो। सहजमें कलह, मार्गमें कष्ट, पीड़ाकी स्थिति उत्पन्न हो। यहां बुध और शुक्र सुधरे हैं। फलस्वरूप मनुष्यके व्यापार व्यवहारमें भारी हानि व सुख साधन नष्ट होनेकी आशंका नहीं की जा सकती है। ता० १५ नवंबरसे समय यश मान प्रतिष्ठा और धन ऐश्वर्य का सम्पादक है। इस बीच धनका संग्रह, आमोद प्रसन्नता की उत्पत्ति एवं शत्रु रोगादिकी निवृत्ति होगी। अन्यान्य ग्रह भी शुभफलोंमें सहयोगी रहे हैं। फलस्वरूप सर्वत्र यश

प्रतिष्ठा एवं भाग्योदय कारिणी कृपाओंकी आशा की जाती है। अक्टूबरमें ता० १६, २०, २३, २४, २७ से ३१ तक। नवंबरमें ६ से १०, १५, १६, १६, २०, २४ से २५। दिसम्बरमें ३ से ७, १२, १३, १७, १८, २१ से २५,३१ जनवरीमें ता० १, ६, १० चन्द्र द्वारा कमजोर हैं।

तुला

ता० १६ अक्टूबरसे तुलामें स्थित हुआ सूर्य मासिक-फलोंकी कल्पनाका कारण हुआ है। यह ग्रह ता० १५ नवंबर तक खेद, हानि, आर्थिक कमजोरी, व्यापार व्यवहारमें अस्थिरता, परिश्रमण आदि फलोंका उत्पादक रहेगा। ता० १५ नवंबरसे धनव्यय, क्लेश, उपद्रव, सुख शान्ति भंग एवं इष्ट मित्रोंमें वैमनस्यता बढ़ायेगा। ता० १५ दिसम्बरसे रविकी स्थिति उत्तम फलोंका निर्माण करती है। अर्थ-संचय, हर्ष, आमोद, मंगल कार्य तथा व्यापार व्यवहार राज-काजमें सर्वत्र यश प्रतिष्ठा कायम करेगा। इस बीच गुरु, मंगल, शनिकी स्थिति कमजोर है। इनके सहयोगसे दूषित फलोंको बल मिलेगा। ता० ८ नवंबरसे ३० नवंबर तक बुध तथा पूरे समयमें शुक्रकी स्थिति सुधरी होनेके कारण शुभ फलोंकी स्थिति भोग, वैभव, यश, सुख साधन निर्माणमें सहायक रहेगी। अक्टूबरमें ता० २१, २२, ३०, ३१। नवंबरमें ता० १, २, ८ से १२, २१, २२, २६ से ३०। दिसम्बरमें ६ से ६, १४, १५, १६, २०, २३ से २७। जनवरीमें ता० २ से ५, ११, १२ का समय चन्द्र द्वारा कमजोर है।

वृश्चिक

प्रस्तुत राशि वाले प्राणीको ता० १६ अक्टूबरसे १३ दिसम्बर तकका समय सूर्य गोचरी द्वारा कमजोर है। इस अवधिमें मनुष्य धैर्य वृत्तिका पतन करे, मिथ्या आचरण पर उतारू हो, हानि सहन करनेमें अपघात कुयोगोंकी ओर अग्रसर होने पर उतारू हो, आदि। इस बीच गुरु, शनि, मंगल आदि सभी ग्रह गोचरीमें कमजोर हैं। यहां केवल शुक्र मात्र जीवन मरणमें संरक्षक है। ता० ३० नवंबरसे तो बुधके भी अच्छे परिणाम हुये हैं। प्रस्तुत समयमें जप-तप अनुष्ठान, भगवद्भजन द्वारा मनुष्यको अपना हित-निर्माण करना चाहिये। व्यापार व्यवहारसे बचनेकी चेष्टा करें। अक्टूबरमें चन्द्र द्वारा ता० २३, २४, २७, २८, नवंबरमें ता० १ से ५, ११ से १४, २४, २५, २८ से ३०। दिसंबर में १ से २, ८ से ११, १७, १८, २१, २२, २६ से २६। जनवरीमें ४ से ८ का समय कमजोर हुआ है।

धनुः

ता० १५ नवम्बर तकका समय आरम्भसे ही शुभफलों का प्रतीक है। इस शुभ समयमें मनुष्य सदाचारकी व्यवस्था कायम करता है। अपने व्यवसायमें नया रूप स्थिर कर पाता है। जिस कार्यको अपने हाथमें ले वह ठोस रूपमें फलदाई हो आदि। ता० १५ नवम्बरके बाद सूर्यके शुभफल समाप्त होते हैं। इसके पश्चात् मनुष्यकी भावनायें कमजोर हो जाती हैं, चित्तमें चंचलता काम करने लगे, पुण्य क्षति से व्यवस्थामें विकार आदि उपस्थित होने लगें। इस बीच ता० २६ नवम्बर तक बृहस्पति भी पूर्ण शुभ कार्योंमें सहायक रहेंगे। बुध मंगल भी इसी अवधिमें श्रेष्ठ हैं। आगे चलकर केवल मात्र शुक्र सहायक रहा है। इसी पुण्यके भरोसे व्यक्ति अपने आपको, अपनी व्यवस्थाको अनुकूल बनाये रखनेमें समर्थ संभव है। साधारण लापरवाही व्यापार-व्यवहारके साथ पद प्रतिष्ठा समाप्त करनेमें प्रमुख हो सकती है। अक्तूबरमें चन्द्र द्वारा ता० १७ से २०, ३०, ३१। नवम्बरमें ता० ३ से ७, १३, १४, १५, १६, २१, २२, २६, २७। दिसम्बरमें ता० १, २, ३, ४, १०, ११, १२, १३, १६, २०, २३,२४, २८, २६, ३०, ३१। जनवरीमें १, ६, ७, ८ का समय कमजोर रहेगा।

मकर

ता० १५ अक्तूबरसे १४ दिसम्बर तकका समय सूर्य द्वारा अधिक सुधरा है। प्रस्तुत समयमें इष्टकार्य सिद्धीकी सम्भावना है। शत्रु एवं राज्य पर विजयकी आशा की जा सकती है। प्रस्तुत अवधिमें मनुष्यके सदाचारका उदय भली भांति रहेगा। अपने व्यवहार क्षेत्रमें प्रतिदिन बहुमुखी प्रशंसा और प्रसन्नता उपस्थित होगी। आधिव्याधियां दूर होंगी। किसी भी प्रकारका नव निर्माण ठोस रूप धारण करेगा। ता० १५ दिसम्बरसे यह स्थिति बदलेगी। मनुष्य आपेसे बाहर कदम उठानेके प्रयत्न करे किन्तु यहां शुभ समयमें गुरु सहायक है और अशुभ समयकी उपस्थितिमें शनि मंगल और शुक्र संरक्षक रूपमें खड़े हुये हैं। इस पर भी ता० १५ दिसम्बरसे मनुष्यको धैर्यसे काम करने गामनकीये।दिलमचा को जरा ढीली करने पर सहजमें

और ही कुछ हो जानेकी आशंकाकी जा सकती है। अक्तूबर मासमें ता० १६, २०, २१, २२, २७, २८। नवम्बरमें ता० १, २, ६, से ६, १५, १६, १७, १८, २४, २५, २८, २६। दिसम्बरमें ३ से ५, ६, १४, १५, १६, २१, २२, २६, २७, ३१। जनवरी में १ से ३, ६ से ११ का समय चन्द्र द्वारा कमजोर हुआ है।

कुम्भ

ता० १६ अक्तूबरसे तुलाका सूर्य प्रस्तुत राशि वाले प्राणीके लिये अशुभ फलका उत्पादक है। आपत्ति, दीनता, रोग और धनकी चेष्टाके निमित्त विरोधको बढ़ावा मिले। ता० १५ नवम्बरसे शेष समय उत्तरोत्तर अर्थ साधक, यश मान प्रतिष्ठाका संपादक तथा सर्वत्र विजन एवं सिद्धीका प्रदाता रहेगा। अनेक कार्योंमें ठोस रूप धारण करनेकी गतिविधि व्यक्तिको वरदान स्वरूप होगी। सुख साधन वृद्धि के साथ प्रसन्न धातावरणका उदय होगा। इस बीच ता० २६ नवम्बरसे गुरुका भारी मात्रामें सुधार हुआ है। शनि राजकाजमें साधारण बाधाकारी अवश्य है। किन्तु पूर्वकी स्थितिको सामने रखते हुये भारी कठिनाई या विकृतिकी आशा नहीं की जा सकती। यों उक्त समयमें शुक्र मंगल भी साधारण फलोंके कारण शुभ ही है। अक्तूबर मासमें चन्द्र द्वारा ता० २१, २२, २३, २४, ३०, ३१। नवम्बर में ३, ४, ५, ८, ६, १०, १७ से २०, २६, २७, दिसम्बर में ता० १, २, ६ से ६, १४, १५, २३, २४ २५। जनवरी में २ से ५, ११, १२ का समय कमजोर माना जायगा।

मीन

ता० १६ अक्तूबर से ता० १५ दिसम्बर तकका समय कमजोर माना जायगा। आलस्य, अपयश आदि निकृष्ट फल होंगे। धन ऐश्वर्यकी हानि होगी। शत्रु रोगका उदय सहज में होगा। ता० १५ दिसम्बरसे समयमें सुधार हुआ है। अपनी गतिविधिमें सहसा प्रकाश होगा। अधिक बलि को भी परास्त करनेकी शक्ति झलक उठेगी। व्यापार व्यवहारमें उत्साह बढ़ेगा। धन ऐश्वर्य संपदा प्रसन्नताकी वर्धक होगी। वर्गसे पूर्ण सहयोगकी आशा है। अक्तूबर मासमें ता० २३, २४, २५, २६। नवम्बरमें ता० १, २, ६ से ७, ११ से १४, १६, से २१, २२, २८, २६। दिसम्बरमें ३, ४, ८ से ११, १६, २०, २६, २७, ३१। जनवरीमें ता० १, ४, से ७ चन्द्र द्वारा कमजोर मानी जायेगी।

सट्टा-फाटकाका अधिकारी कौन ?

सट्टे के गुण दोषों पर विवेचनात्मक दृष्टिकोण

[लेखक :—श्री व्रजेश, बी० जे० आश्रम सुल्तानिया म० प्र०]

अभी तक हमारे देशमें सट्टे के सम्बन्धमें भ्रम फैला हुआ है और वास्तवमें पूछा जाय तो जब तक यह निश्चय न हो जाय कि सट्टा क्या बला है तब तक उस पर कुछ लिखना जरा टेढ़ी खीर है। अतः सर्व प्रथम यही स्पष्ट कर देना उचित होगा।

उत्पादक एवं उपभोक्ताके मध्य वस्तुका आदान-प्रदान तीन प्रकारसे होता है। एक तैयार दूसरा वायदा या आमदनी और तीसरा सट्टा (फ्यूचर्स) तैयार माल वह है जो बेचवाल के पास मौजूद हो और खरीदार उसे देख एवं भली प्रकार ठोक बजाकर मोल ले सके। गल्ला तिलहन, मकान, कपड़ा, लोहा, सिले हुए कपड़े आदि सभी प्रकारका माल तैयारी होता है। जो माल दूकान, गोदाम, खत्ती आदिमें मौजूद हो वह तैयारी कहलाता है।

जो माल बेचने वालेके पास नहीं है परन्तु वह एक निश्चित समय पर दे सकता है ऐसे सौदेको वायदेका सौदा कहते हैं। अनेक बार ऐसा देखा गया है कि एक प्रकार का माल एक नगरमें नहीं है। परन्तु दूसरे नगरमें है ऐसी अवस्थामें समयकी मियाद बांधकर सौदा तय कर लिया जाता है और उसी निश्चित समय पर मालकी डिलेवरी दे दी जाती है। अनेक बार ऐसा भी अवसर पड़ जाता है कि भिन्न-भिन्न देसावरोंके भिन्न-भिन्न भाव होते हैं और सब देशावरोंके भावकी पूरी जांच पड़ताल किए बिना सौदा करने वाला धोखा भी खा जाता है। उदाहरण द्वारा यह बात स्पष्ट हो जायगी। फर्ज करें एक दूकानदारसे १०० ग्राहक सेनगुप्त नामक धोती मांगते हैं, अन्य प्रकारकी धोतियां ग्राहकोंको लेना स्वीकार नहीं, अधिक दाम देकर भी वह सेनगुप्त मार्ककी ही धोती लेना चाहते हैं। दूकानदार अपने नगरके अन्य दूकानदारोंसे पूछताछ करता है परन्तु वहां भी माल नहीं है। मान लें यह घटना जबलपुरकी है और उक्त दूकानदार कानपुर, कलकत्ता, बम्बई नागपुर, दिल्ली आदि के पास जंचाई भेजता है। कानपुरमें मालकी कमी और ग्राहक अधिक होनेके कारण दाम अधिक हैं। कलकत्ते में माल नहीं है और बम्बईमें अधिक माल होते हुए भी भविष्यके लिए संचय रखने की जरूरत समझी जाती है। नागपुर और दिल्ली वाले बेचनेको तैयार हैं, मगर नागपुर में दाम कुछ ऊंचा मांगते हैं और १५ दिनमें रेलवे द्वारा माल जबलपुर पहुंचाने का वायदा भी करते हैं, कारण रेल की बुकिंग खुली हुई है, उधर दिल्लीका दाम कम तो अवश्य है मगर बुकिंग दो महीने तक बन्द रहेगी। ऐसी अवस्थामें दूकानदार अपने ग्राहकोंको आवश्यकतानुसार कुछ माल आवश्यक होनेके कारण १५ दिनमें ही ऊंचा दाम देकर भी नागपुरसे मंगा लेता है और जितने मालके लिए २ महीनेका समय मिलता है, दिल्लीसे मंगाता है। इस सौदेके लिए दूकानदारको ५ भिन्न-भिन्न मण्डियोंसे लिखा पढ़ी करनी पड़ती है। कभी-कभी एक ही मंडीसे दो प्रकारके भाव भी आते हैं। इन्हीं सब असुविधाओंको ध्यान में रखते हुये वायदेके केन्द्र खुले और ऐसे दलाल खड़े हुए जो भिन्न भिन्न देशावरोंसे अपना सम्बन्ध रखते थे और मालके स्टाक एवं खपतके ब्यौरेके भी जानकार रहते थे। सौदा मिलने पर अधिक दौड़धूप न करना पड़े। इस हेतुसे नगरके एक स्थानमें निश्चित समय पर पहुंचकर सौदा करनेके हेतु इन दलालोंने अपने एक्सचेंज खोल लिए। एक्सचेंजमें समयानुकूल नियम उपनियम बने और उनको उपयोगी बनाया गया। इस प्रकार वायदेके सौदोंका प्रारम्भ हुआ।

फाटका इन दोनों प्रकारके सौदोंसे भिन्न है। जो माल वास्तवमें तैयार नहीं है परन्तु उसकी आवश्यकता है, उसका

* सोलनके अनुभव *

[सोलनमें इस बार तीनवर्षके पश्चात् भारतकी सुविख्यात योगिनी महामहिमामयी दैवीविभूतिमां श्री आनन्दमयीने पदार्पण किया, आपके साथ श्री १०८ अवधूत कृष्णानन्दजी महाराज तथा अनेक सन्त महात्मा भी पधारे हुए हैं। प्रतिदिन भजन कीर्तन कथा और माताजी तथा महात्माओंके उपदेशामृत पानसे स्थानीय जनता कृत-कृत्य हो रही है। लगभग एक माससे सोलन नगर और विशेषकर राजप्रासाद तीर्थस्थान-सा बना हुआ है, जहां बम्बई कलकत्ता अहमदाबाद लखनऊ दिल्ली आदि भारतके सुदूर नगरोंसे प्रतिष्ठित भक्त जन मांके चरणोंमें सोलन आकर शान्ति लाभ कर राजर्षि (सोलन-नरेश) की अनुपम श्रद्धाभक्ति एवं आतिथ्यकी भूरि-भूरि प्रशंसा करते हैं। धर्ममार्तण्ड राजर्षि श्री १०५ मान् दुर्गासिंहजी महोदयकी गुणगरिमाके सम्बन्धमें हमें यहां कुछ नहीं कहना है, वह तो सर्वविदित ही है। हां, हम सोलनके नागरिकोंका यह परम सौभाग्य है-कि इन राजर्षिकी कृपासे प्रतिवर्ष हमें संसारकी उच्च दैवीविभूतियोंके दर्शन एवं उपदेशामृत पान करनेका सुअवसर प्राप्त हो जाता है। इन्हीं दिनों सेण्ट-जान्स कालेज (आगरा) के प्राध्यापक श्री अम्बिकाचरण शर्माजी भी सोलन आये हुए थे, उन्होंने इस सुरम्य प्रदेश और स्थानीय मेलेके कुछ संस्मरण लिखे वे हम यहां प्रकाशित कर रहे हैं। —सम्पादक]

श्रद्धेय नटवर काका (श्री न० म० अन्ताणी, प्रोफेसर सेण्टजान्स कालेज आगरा) के अनुग्रह एवं उत्साह तथा भाई विनोदराय अन्ताणी (सोलनके वर्तमान मजिस्ट्रेट एवं स्थानापन्न डी० सी०) के आग्रहसे इस वर्ष इस प्रसिद्ध एवं रमणीक पर्वतीय प्रदेशको देखनेका सौभाग्य प्राप्त हुआ। मुझे यह स्वीकार करते हुए कोई संकोच नहीं कि यह मेरे जीवनका प्रथम सुन्दर एवं अत्यन्त सुखद अनुभव है। भाई विनोदराय एवं उनकी सौभाग्यवती पत्नीजीके नैसर्गिक प्रेम एवं आतिथ्य की सराहना करना प्रायः असंभव सा ही प्रतीत होता है। यहां रहते हुए मैंने एक क्षणके लिए भी यह अनुभव नहीं किया कि मैं कहीं परदेशमें रह रहा हूँ। कालका स्टेशनसे मोटरमें आते हुए पर्वतोंके चक्कर दार मार्गको देखकर आश्चर्य हुआ और उस समय मानवकी उस अपार एवं असीम शक्तिका अनुभव होने लगा जिसके द्वारा उसने आकाश, पृथ्वी एवं समुद्र पर विजय प्राप्त की है। सोलन वैसे तो एक छोटा सा नगर ही है परन्तु यहां पर आधुनिक सभ्यता तथा संस्कृतिका पूर्ण प्रभाव दृष्टिगोचर होता है। आगरे जैसे विशाल नगरके रहने वालेको भी यह नहीं प्रतीत होता कि वह किसी ऐसे स्थान पर आ गया है जो आधुनिक संसारके कोलाहलसे दूर पर्वतोंकी नीरव शांतिमें बसा हुआ है। यहांकी सुन्दर एवं स्वच्छ सड़कें, हवादार मकान, सिनेमा-घर, मोटरोंकी चहल पहल, स्त्री-पुरुषोंकी वेश भूषा आदि एक बड़े नगरका ध्यान दिलाते रहते हैं। इतना ही नहीं, विद्युतका प्रकाश एवं नलका जल भी यहां उसी प्रकार प्राप्त हैं जिस प्रकार भारतके समृद्ध नगरोंमें।

एक दिनकी शिमला यात्राने तो इस आनन्दमें और भी वृद्धि कर दी। शिमला सोलनकी अपेक्षा बहुत अधिक ऊंचाई पर है और बड़ा नगर भी है। यहां पर सरकारी आफिसोंके अतिरिक्त अनेक धनी मानी सज्जन स्थायी रूपसे निवास करते हैं, यहां पर जाखू पर्वत शिखर पर श्री हनुमानजीका मन्दिर है जिसके दर्शन करना प्रत्येक यात्रीके लिए आवश्यक है। उस ऊंचे शिखर पर पहुंच कर जो शांति प्राप्त होती है वह माल (शिमलेका प्रसिद्ध बाजार पर)नहीं प्राप्त होती। परन्तु सायंकालमें इस बाजार पर भी अच्छी रौनक रहती है। हजारों स्त्री पुरुषोंकी चहल पहलसे समस्त पर्वत प्रदेश मुखरित हो उठता है। प्रायः सभी लोग इस दृश्यकी बहुत प्रशंसा करते

ता० २८ - मन्दी
ता० २९ — तेजी
ता० ३० - मन्दी
ता० ३१ — मन्दी

पाठक इसको देखें और लिखें कि कहां तक मिली और कहां नहीं।



हैं, यद्यपि मुझे उसमें अधिक आकर्षण दिखाई न दे सका।

हमारे सौभाग्यसे सोलनका वार्षिक मेला भी इन्हीं दिनोंमें आ पड़ा। मेलाका प्रारम्भ शूलिनी देवी (संभवतः सोलनकी अधिष्ठात्री देवी) की सवारीसे प्रारम्भ हुआ, जिसमें सोलनके महाराज एवं सभी नागरिकोंने बड़े उत्साहसे भाग लिया। शोभायात्रा (जुलूस) लम्बी एवं दर्शनीय थी। सोलनके सुप्रसिद्ध व्यवसायी उत्साही नवयुवक श्री ला. शिवचरणदास जी इस दिनके कार्यक्रम और दुर्गाभगवतीके मन्दिरको सुसज्जित करने, रात्रिजागरण और मेलेके कार्यमें सर्वाधिक लगन और उत्साहसे कार्य करते दिखाई दिये। सुना जाता है कि उक्त सज्जन प्रत्येक सार्वजनिक शुभ समारम्भमें यथाशक्ति सक्रिय सहयोग देते हैं। इस मेलेका इतिहास तो बहुत प्राचीन है। परन्तु उसको आधुनिक बृहद् रूप देनेका श्रेय सोलनके लोकप्रिय मजिस्ट्रेट श्री विनोदराय अन्तार्णीको है, जिन्होंने इसकी बहुत सुन्दर योजना की है। मेलेमें आस पासके गांवोंसे हजारोंकी संख्यामें नर-नारी आते हैं। इस वर्ष मेलेके उपलक्षमें यहांके उत्साही मजिस्ट्रेटकी अध्यक्षतामें यहांके नवयुवकोंने टाउन हालमें एकांकी नाटकों तथा संगीतका सुन्दर आयोजन भी किया जो प्रायः सफल कहा जा सकता है। मेलेमें बाल प्रदर्शनी, बालकोंके खेल कूद, पहलवानोंकी कुश्तियां, कृषि प्रदर्शिनी, पशु-प्रदर्शिनी आदिकी अति सुन्दर योजना की गई थी। इस अवसर पर हिमाचल-प्रदेशके उप-राज्यपाल मेजर जेनरल हिम्मतसिंहजी भी पधारे और दो दिन तक यहां पर ठहरे। उनके शुभागमनसे जनतामें और भी उत्साह बढ़ गया। जनरल साहबने २१ जूनको अपनी ओरसे सोलनके गण्यमान्य सज्जनों को एक पार्टी भी दी जिसमें वे सभी आगन्तुकोंसे बड़े प्रेमभावसे मिले। वास्तवमें प्रजातंत्र राज्यके अधिकारियोंको जनतासे इसी प्रकारका सम्पर्क रखना आवश्यक है। वे २२ ता० को मेलेमें भी पधारे।

यहां पर 'श्रीस्वाध्याय' पत्रके सम्पादक श्री पं० हरदेव शर्मा त्रिवेदीजीसे मिलनेका सौभाग्य हुआ और उन्हीके आग्रहसे यह छोटासा लेख लिखा गया है। बादलोंके पर्वत पर छा जानेका दृश्य अत्यन्त मनोरम दिखाई देता है, परन्तु दुर्भाग्यसे मैं कवि नहीं हूं नहीं तो सुन्दर कविता लिखनेका प्रयास करता। रात्रि में पर्वत प्रदेशकी शोभा और भी अधिक बढ़ जाती है। उस समय दूर २ स्थानों पर चमकते हुए दीपक इस प्रकार दीखते हैं मानो आकाशमें तारागण चमक रहे हों। शिमलाको देखकर तो ऐसा प्रतीत होता था मानों दीपावली हो।

वास्तवमें इस प्रकारके अनुभव मनुष्यके जीवनमें बहुत महत्व रखते हैं। मेलेकी इतनी सुन्दर योजनाके लिए मैं टाउन-एरिया कमेटीके प्रेसीडेन्ट, सेक्रेटरी, सदस्य तथा अन्य सज्जनोंको बधाई देता हूं। मेलेकी सारी योजनाको ऐसा सुन्दर रूप देनेका श्रेय वास्तवमें यहांके मजिस्ट्रेटको है जिन्होंने इसकी सफलताके लिए दिन रात बड़ी लगनसे कार्य किया। वास्तवमें स्वतंत्र भारतको इसी प्रकारके कर्मठ एवं निरभिमानी अधिकारियोंकी आवश्यकता है जो जनताको आतंक द्वारा नहीं वरन् प्रेम तथा सेवा द्वारा अपने वशमें रख सकें।



विद्वान् लेखकोंसे आवश्यक निवेदन

'श्रीस्वाध्याय' के बारहवें वर्षका नववर्षाङ्क पहले सब विशेषाङ्कोंसे अधिक सुन्दर एवं आकर्षक रूपमें प्रकाशित हो रहा है। यह 'नववर्षाङ्क' आश्विन शु० १ ता० २० सितम्बर १९५२ को छपकर तैयार हो जावेगा। अतः आप अपना लेख, कविता, कहानी आदि संक्षिप्त हृदयस्पर्शी मौलिक सुन्दर भाषामें लिखकर श्रावण शु० १५ ता०५ अगस्त १९५२ तक कार्यालयमें सम्पादकके पास भेजने की कृपा करें। इस अवधिके पश्चात् आने वाले तथा अस्पष्ट और कागजके दोनों ओर लिखे हुए लेख प्रकाशित न हो सकेंगे।

इस अङ्कमें १६ पृष्ठ बढा देने पर भी कई उपयोगी लेख कविता कहानी साहित्य-समालोचना और कुछ सहयोगियोंके विज्ञापन तक भी प्रकाशित न हो सके। अग्रलेख (सम्पादकीय) भी इस बार केवल दो पृष्ठोंमें ही देना पड़ा इसका हमें खेद है। आगामी नववर्ष विशेषाङ्क पर्याप्त बड़ा होगा अतः इस अङ्ककी अवशिष्ट आवश्यक सामग्री नववर्षाङ्कमें प्रकाशित की जावेगी। विलम्बके लिए आशा है विद्वान् लेखक विज्ञापक और ग्रन्थप्रेषक महानुभाव अनुचित न मानेंगे।

धन्यवाद—इस अङ्कके प्रूफ-संशोधन कार्यमें 'श्रीस्वाध्याय' के यशस्वी लेखक एवं हमारे परमस्नेही, सुप्रसिद्ध विद्वान् विद्याभूषण विद्यावागीश विद्यानिधि श्री पं० दीनानाथजी शास्त्री सारस्वत (आचार्य श्री रामदल-संस्कृत महाविद्यालय दरीबाकलां देहली) ने पूर्ण सहयोग दिया। आपके परिश्रम और कृपाका ही फल है कि यह अङ्क निश्चित समय पर पाठकों तक पहुंच रहा है। इसके लिए श्रीस्वाध्याय-परिवार श्रद्धेय शास्त्रीजी का आभारी है।

हरदेव शर्मा त्रिवेदी

सम्पादक 'श्रीस्वाध्याय' सोलन (शिमला)

पं० हरदेव शर्मा त्रिवेदी द्वारा अर्जुन प्रेस दिल्लीमें छपकर श्रीस्वाध्याय सदन सोलन (शिमला) से प्रकाशित